कक्षा-10

पीयूषम्

द्वितीयो भागः

INDIAN ARMY

Arms you FOR LIFE AND CAREER AS AN OFFICER

Visit us at www.joinindianarmy.nic.in

or call us (011) 26173215, 26175473, 26172861

Ser NO	Course	Vacancies Per Course	Age	Qualification	Appln to be received by	Training Academy	Duration of Training
1.	NDA	300	16½ - 19 Yrs	10+2 for Army 10+2 (PCM) for AF, Navy	10 Nov & 10 Apr (by UPSC)	NDA Pune	3 Yrs + 1 yr at IMA
2.	10+2 (TES) Tech Entry Scheme	85	16½ - 19½ Yrs	10+2 (PCM) (aggregate 70% and above)	30 Jun & 31 Oct	IMA Dehradun	5 Yrs
3.	IMA(DE)	250	19 - 24 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	IMA Dehradun	1½ Yrs
4.	SSC (NT) (Men)	175	19 - 25 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
5.	SSC (NT) (Women) (including Non- tech Specialists and JAG entry)	As notified	19 - 25 Yrs for Graduates 21-27 Yrs for Post Graduate/ Specialists/ JAG	Graduation/ Post Graduation /Degree with Diploma/ BA LLB	Feb/Mar & Jul/ Aug (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
6.	NCC (SPL) (Men)	50	19 - 25 Yrs	Graduate 50% marks & NCC 'C' Certificate (min B Grade)	Oct/ Nov & Apr/ May	OTA Chennai	49 Weeks
	NCC (SPL) (Women)	As notified					
7.	JAG (Men)	As notified	21 - 27 Yrs	Graduate with LLB/ LLM with 55% marks	Apr / May	OTA Chennai	49 Weeks
8.	UES	60	19-25 Yrs (FY)18-24 Yrs (PFY)	BE/B Tech	31 Jul	IMA Dehradun	One Year
9.	TGC (Engineers)	As notified	20-27 Yrs	BE/ B Tech	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
10.	TGC (AEC)	As notified	23-27 Yrs	MA/ M Sc. in 1st or 2nd Div	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
11	SSC (T) (Men)	50	20-27 Yrs	Engg Degree	Apr/ May & Oct/ Nov	OTA Chennai	49 Weeks
12.	SSC (T) (Women)	As notified	20-27 Yrs	Engg Degree	Feb/ Mar & Jul/ Aug	OTA Chennai	49 Weeks

पीयूषम्

(द्वितीयो भागः)

कक्षा – X

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2010-11

पुनर्मुद्रण : 2013-14

मूल्य : रु० 22.50

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800001 द्वारा प्रकाशित तथा श्री साईं ऑफसेट, संदलपुर, पटना-6 द्वारा 75000 प्रतियाँ मुद्रित।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल-2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा IX हेतु नए पाठ्यक्रम लागू किया गया है। इस क्रम में सत्र-2010 के लिए I, III, VI एवं X की सभी भाषायी एवं गैर-भाषायी पुस्तकों का पाठ्यक्रम लागू किया गया है। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X की गणित एवं विज्ञान तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित I, III, VI तथा X की सभी पुस्तकें एवं शैक्षिक सत्र-2011 में वर्ग II, IV, VII तथा शैक्षिक सत्र-2012 में वर्ग V एवं VIII की सभी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की गई हैं।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार,शिक्षा मंत्री श्री पी० के० शाही तथा शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव, श्री अमरजीत सिन्हा के मार्ग दर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा-जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

जे०के०पी० सिंह, भा०रे०का०से०
प्रबन्ध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

संरक्षण :

- **श्री हसन वारिस,** निदेशक (प्रभारी), राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना
- **श्री रघुवंश कुमार,** निदेशक (शैक्षणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग) पटना
- **डॉ० सैयद अब्दुल मोईन,** विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
- **डॉ० कासिम खुर्शीद,** विभागाध्यक्ष (प्रभारी), भाषा शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना

संस्कृत पाठ्यपुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष – **प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'**, पूर्व आचार्य तथा अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

समन्वयक – **डॉ० सुरेन्द्र कुमार**, व्याख्याता (वि० शि० से०) राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना–800 006

सदस्य –

1. डॉ० मधु बाला सिन्हा, व्याख्याता, धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
2. डॉ० वैद्यनाथ मिश्र, संस्कृत विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (सारण)
3. डॉ० उपेन्द्र पाठक, सहायक शिक्षक, सर जी० डी० पाटलिपुत्र उच्च माध्यमिक विद्यालय, कदमकुआँ, पटना
4. डॉ० भवनाथ प्रतिहस्त, सहायक शिक्षक, द्वारका उच्च विद्यालय मंदिरी, पटना
5. डॉ० पूरण साह, सहायक शिक्षक, +2 राजकीय बालक उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजेन्द्रनगर, पटना

अकादमिक सहयोग –

श्री इम्तियाज आलम — व्याख्याता, शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

श्री देवेन्द्र प्रसाद — प्रधानाध्यापक, उच्च विद्यालय परसा, सारण

पुरोवाक्

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा" अद्य संस्कृतस्य महत्त्वं समस्ते संसारे विविधेषु ज्ञान-विज्ञान-क्षेत्रेषु अनुभूयते। अद्यतने संगणक-युगे 'नासा' विज्ञानसंस्था-द्वारा संस्कृतस्य संगणकीय-भाषारूपेण महत्त्वं प्रतिपादितमस्ति। भारतवर्षे तु संस्कृतं प्राप्तेतिहासानुसारम् अतिप्राचीनकालतः पठ्यते पाठ्यते च। वस्तुतः संस्कृतं भारतवर्षस्य परिचायकं वैशिष्ट्यं वर्तते। भारतस्य मूलभूतसंस्कृतेः वाहिका संस्कृतभाषा एव। इदमेव कारणम् अस्ति भारतवर्षस्य विभिन्नराज्येषु विद्यालयस्तरे संस्कृतभाषायाः अध्यापनं प्रचलितं दृश्यते। अस्मिन्नेव क्रमे 2005 तमे ईस्वीयवर्षे राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखा प्रकाशिता, यत्र इयम् अनुशंसा कृता अस्ति यत् छात्राणां विद्यालयजीवने व्यावहारिकजीवने च सामञ्जस्यं भवेत्। इतः पूर्वं शिक्षाव्यवस्थायाम् एतादृशं संयोजनं नैव दृष्टम् आसीत्। तदा केवलं पुस्तकीयज्ञानस्य महत्त्वं रेखांकितमासीत्। फलतः विद्यालयस्य परिवारस्य परिवेशस्य च मध्ये अन्तरालम् अनुभूतम्। राष्ट्रिय-पाठ्य-चर्याम् आश्रितानि पाठ्यपुस्तकानि तु मूलभावस्य व्यवहारदिशायां प्रयत्नरूपाणि वर्तन्ते। संस्कृतविषयस्य अनुशीलने बिहारप्रान्तेऽपि तादृशानि पाठ्यपुस्तकानि निर्मितानि स्युः, इति अस्माकं संकल्पः। आशां करोमि यत् अस्माकम् अयम् अभिनवः प्रयासः 1986 तमवर्षीय-राष्ट्रियशिक्षानीतौ अनुशंसितायाः छात्र-केन्द्रित-शिक्षा-व्यवस्थायाः विकासाय प्रवर्तते।

अस्माकं सत्प्रयासस्य सफलता विद्यालय-प्राचार्याणां शिक्षकाणां न्यूनाधिकरूपेण अभिभावकानां सक्रियसहयोगैः एव संभाव्यते। यतो हि एते सर्वे छात्रान् स्वानुभवद्वारा ज्ञानार्जनाय, कल्पना-शीलतायाः विकासाय, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रेरयन्ति। अस्यां दशायां यदि अनुकूला सुरुचिपूर्णा पाठसामग्री प्रस्तूयते तर्हि छात्राः परिवारे अग्रजैः अभिभावकैः विद्यालये च शिक्षकैः प्रदत्तेन स्वानुभूतज्ञानेन सह स्वकीयं पूर्वार्जितं ज्ञानं संयोज्य किमपि नवीनं प्रखरतरं च ज्ञानं प्राप्नुवन्ति। परीक्षायाः आधारोऽपि व्यापकः भवेत्। छात्राः पुस्तकाधारितं ज्ञानमात्रम् एव न स्वीकुर्युः। छात्रेषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भ-प्रवृत्तेश्च विकासः तदैव भवति यदा तान् छात्रान् अपि शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागिनः स्वीकुर्याम। छात्राः केवलाः ज्ञानस्य ग्राहकाः श्रोतारो वा न स्युः।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

एतेषां प्रयोजनानां सिद्धये विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनम् आवश्यकम्। यथा दैनिकसमय-सारण्यां परिवर्तनम् अपेक्षितं तथैव वार्षिक-कार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता अपि अनिवार्या। अन्यथा शिक्षणार्थं नियते समयावधौ वास्तविकं शिक्षणं नैव सम्भाव्यते। निश्चितरूपेण पुस्तकमिदं राष्ट्रियशिक्षानीतेः बिहारराज्यस्य विशेषस्थितेः च दृष्ट्या छात्राणां विद्यालयजीवने आनन्दाय प्रभावकारि भविष्यति। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-समय-दृष्ट्या च विविधस्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नः कृतः। इदं पुस्तकं छात्रेभ्यः चिन्तनस्य, उत्सुकतावृद्धेः, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च पर्याप्तम् अवसरं दास्यति।

अस्य अनुपूरकरूपेण द्रुतवाचनाय छात्राणां मनोविनोदाय स्वतः अनुशीलनाय च सरला सरसा च सामग्री प्रदत्ता। तत्र कविता-गीत-कथा-हास्यकणिका-नाटकादीनां संग्रहः अस्ति।

बिहार-राज्य-शैक्षिकानुसन्धान-प्रशिक्षण-परिषद् एतस्य निर्माणकार्ये संस्कृत-पाठ्य-पुस्तक-विकास-समितेः अध्यक्षाय विद्वद्वरेण्याय डा० उमाशंकरशर्मणे तत्सहायकेभ्यः प्रतिभागिभ्यः च भूरिशः साधुवादं वितरति, स्वकृतज्ञतां च ज्ञापयति। तदनु पाठ्य-पुस्तक-निर्माणक्रमे संयोजनकर्मणि तत्पराय डा० सुरेन्द्रकुमारपालाय च महान्तमाभारं प्रकाशयति।

''प्रवर्तातां पुस्तकमिदं संस्कृतहिताय''

ABSOLUTE GUIDE SOLUTIONS PATNA

हसन वारिसः
निदेशकः (प्रभारी)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहारः

भूमिका

आज संस्कृत भाषा की महिमा से सभी लोग अवगत है । संसार की उपलब्ध भाषाओं में सर्वाधिक प्राचीन तथा सबसे लम्बी ऐतिहासिक परम्परा की यह भाषा रही है । ऋग्वेद के समय से आज तक अनवरत इसका साहित्यक तथा वाचिक प्रयोग होता रहा है । प्रत्येक भारतीय के हृदय में इसके प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव विद्यमान है । विदेशी लोगों ने भी संस्कृत का महत्व स्वीकार करके इसके पठन-पाठन की व्यवस्था अपने विश्वविद्यालयों में की है । संस्कृत भाषा से उत्तर भारत की सभी भाषाएँ निर्गत हुई हैं चाहे हिन्दी हो, बंगला हो, उड़िया हो, असमिया भाषा हो, मराठी हो, गुजराती हो, पंजाबी या डोगरी हो । दक्षिण भारत की भी सभी भाषाएँ अपनी शब्द-सम्पत्ति के लिए विपुल रूप से संस्कृत भाषा पर आश्रित हैं ।

आज के वैज्ञानिक युग में संस्कृत की उपयोगिता पद-पद पर प्रतीत होती है । ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में यदि भारतीय भाषाएँ उनके सिद्धान्तों की व्याख्या करती हैं तो पारिभाषिक शब्दावली के लिए संस्कृत का स्रोत ही एकमात्र आलोक-स्तम्भ के रूप में खड़ा दिखाई पड़ता है । भारत एक बहुभाषी देश है जिसमें विभिन्न भाषाओं के पारस्परिक रूपान्तर के लिए संस्कृत एक मध्यस्थ भाषा के रूप में अवस्थित है । उन-उन भाषाओं को संस्कृत की शब्दावली आकृष्ट करती है तथा अनुवादक सरलता से एक भाषा से दूसरी भाषा में अभिव्यक्ति कर लेते हैं ।

संस्कृत में शब्द-निर्माण की क्षमता संसार की सभी भाषाओं से अधिक है । हजारों धातुओं, प्रत्ययों, उपसर्गों तथा सम्बद्ध अर्थों की व्यवस्था ऐसे वैज्ञानिक रूप से इस भाषा में वर्त्तमान है कि कोई भी नव शिक्षार्थी नए शब्दों को अपनी सुविधा के अनुसार निर्मित कर सकता है । इसीलिए आज विश्वभर में पारिभाषिक शब्दावली के लिए भविष्य का विज्ञान जागत् संस्कृत की ओर उन्मुख के लिए भविष्य का विज्ञान जगत् संस्कृत की ओर उन्मुख है । विज्ञान का कितना भी विकास हो उसके उपकरणों के लिए पारिभाषिक शब्दावली देने में संस्कृत भाषा विश्व की सभी भाषाओं की अपेक्षा अधिक समृद्ध है । संस्कृत में शब्द-रचना के उदाहरण के लिए हम "योग" शब्द को

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

लें तो देखेंगे कि इसके पूर्व विविध उपसर्गों के इकहरे दुहरे तिहरे प्रयोग से अनुयोग, वियोग, संयोग, अभियोग, आयोग, प्रतियोग, उपयोग, व्यायोग, प्रतिसंयोग, अध्यायोग, अभ्यनुयोग इत्यादि शब्दों का निर्माण होता है । दूसरी ओर प्रत्ययों की अद्‌भुत शृंखला शब्दों से लगकर प्रायोगिक, संयौगिकता, अभियुक्त अभ्युक्ति इत्यादि विविध शब्दों को जन्म देती है ।

ऐसी समृद्ध भाषा होने पर भी संस्कृत को आज भौतिकता-प्रधान युग में अनेक संघर्ष और प्रतिघात झेलने पड़ रहे हैं । फिर भी इसका प्रसार नयी-नयी साहित्यिक और शास्त्रीय रचनाओं के द्वारा हो रहा है । इतनी रचनाएँ संस्कृत में कभी नहीं हुईं जितनी पिछले एक सौ वर्षों में हुई हैं । उनमें अधिसंख्य रचनाएँ प्रकाशित हैं । रचनाएँ भारत के सभी राज्यों में होती रही हैं, इसलिए आज एकमात्र भाषा ही है जो पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रही है । संस्कृत साहित्य में वे सारी बातें आ रही हैं जो किसी आधुनिक सम्पन्न भाषा में हो सकती हैं । आज विद्वानों का एक समृद्ध वर्ग मानता है कि संगणक लिए भावी भाषा के रूप में संस्कृत ही समर्थ है । अतः भौतिकवादी युग संस्कृत की क्षमता को स्वीकार करता है ।

संस्कृत की प्राचीनता के साथ आधुनिकता का परिदृश्य निर्विवाद है । ऐसी भाषा का अनुशीलन अपनी संस्कृति के प्रति तो हमें प्रबुद्ध बनाता ही है, आधुनिक विषयों को इसी प्राचीन भाषा के द्वारा आत्मसात् करने के लिए प्रवृत्त करता है । आज हमारे बहुभाषिक राष्ट्र में इस सर्वमान्य भाषा की आवश्यकता राष्ट्र की एकता के लिए है । अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा की अपेक्षा यह अपने देश की प्राचीनतम सांस्कृतिक भाषा है । इसलिए इसके अनिवार्य अनुशीलन की प्रासंगिकता है । जिस प्रकार बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं को सीखने में संस्कृत सहायक होती है उसी प्रकार कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता का संस्कृत सीखने में उपयोग किया जा सकता है । बिहार राज्य के सन्दर्भ में यह बहुभाषिकता केवल मैथिली, भोजपुरी तथा मगही एवं उनकी अंगरूप (अंगिका, वज्जिका आदि) भाषाओं तक सीमित है । ये सब संस्कृत से अपनी शब्द-सम्पत्ति, व्याकरण तथा वाक्य-रचना का व्यापक प्रभाव प्रस्तुत करती हैं ।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के आलोक में तथा बिहार की अपनी विद्यालयीय आवश्यकता के आलोक में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 तथा 10) के लिए वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पाठ्यक्रम विकसित किया गया है । इस पाठ्यचर्या में निम्नांकित पाँच लक्ष्य रखे गये हैं –

1. भारमुक्त शिक्षा का कार्यक्रम ।

2. आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में शिक्षा की प्रस्तुति ।

3. जीवन के परिवेश से शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध होना ।

4. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार ।

5. कण्ठाग्र करने की परम्परागत पद्धति से हटकर छात्रों को स्वतंत्र चिन्तन के लिए प्रेरित करना ।

संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम में उपर्युक्त निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप दशम कक्षा के लिए पीयूषम् (द्वितीयः भागः) नामक पाठ्यपुस्तक की प्रस्तुति की गई है । नवीन पाठ्यक्रम तथा वर्त्तमान पुस्तक की विशिष्टताओं में यह उल्लेखनीय है कि इसमें संस्कृत को एक जीवित भाषा के रूप में देखा गया है जिसकी धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है । इसी दृष्टि से इसमें नये विषयों और नई रचनाओं का समावेश किया गया है । नये विषयों में पाटलिपुत्र के वैभव, संस्कृतसाहित्य की लेखिकाओं, भारतीय संस्कारों, विश्वशान्ति तथा शास्त्रकारों का परिचय विशेषरूप से उल्लेखनीय है ।

प्राचीन रूढ़िग्रस्त समाज के सुधारक स्वामी दयानन्द का जीवनचरित भी रखा गया है । बिहार के प्रसिद्ध मध्यकालीन कवि विद्यापति द्वारा रचित एक उपदेशात्मक और मनोरञ्जक कथा भी संकलित की गयी है । बिहार के अंगप्रदेश के प्राचीन शासक राजा कर्ण की दानवीरता से सम्बद्ध एक नाटकांश भी दिया गया है । एक आधुनिक कर्मवीर की कल्पित कथा भी दी गयी है जो निर्धन और दलित परिवार में जन्म लेकर भी अपने उद्योग और इच्छाशक्ति से उच्चपद प्राप्त करता है । प्राचीन पाठों में नीतिश्लोक, मन्दाकिनी-वर्णन (वाल्मीकीय रामायण) तथा व्याघ्रपथिक कथा-ये पाठ समाविष्ट किये गये हैं।

प्रत्येक पाठ के आरम्भ में सम्बद्ध पाठ के समुचित सन्दर्भ संस्कृत भाषा में दिये गये हैं । अल्प परिश्रम से उन्हें समझा जा सकता है । पाठों को स्वतः समझने के लिए उनके अन्त में शब्दार्थ तथा अपेक्षित व्याकरण-सन्दर्भ दिये गये हैं । पाठों को विविध आयामों में समझने के लिए यथेष्ट अभ्यासचारिका भी दी गयी है जिसमें कुछ मौखिक और कुछ लिखित अभ्यास कार्य का

समावेश है । कुछ पाठों में योग्यता-विस्तार के अन्तर्गत अतिरिक्त सूचनाएँ दी गयी हैं जिनसे कहीं-कहीं पाठों को उचित परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है और कहीं-कहीं अधिक जानने की उत्सुकता भी हो सकती है ।

पाठों का परिचय

यद्यपि सभी पाठों के सन्दर्भ उनके आरम्भ में दिये गये हैं तथापि यहाँ उनका संक्षिप्त परिचय दिया जाता है । इस पुस्तक में कुल चौदह पाठ हैं जिनमें चार पद्यात्मक, तीन कथात्मक, दो संवादात्मक तथा पाँच निबन्धात्मक हैं । इनका परिचय इस प्रकार है ।

(क) पद्यात्मक पाठ

1. मङ्गलम् –इस पाठ में चार मन्त्र क्रमशः ईशावास्य, कठ, मुण्डक तथा श्वेताश्वतर नामक उपनिषदों से संकलित है । ये मङ्गलाचरण के रूप में पठनीय हैं । वैदिकसाहित्य में विशुद्ध आध्यात्मिक ग्रन्थों के रूप में उपनिषदों का महत्त्व है । इन्हें पढ़ने से परम सत्ता के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है, सत्य के अन्वेषण की प्रवृत्ति होती है तथा आध्यात्मिक खोज की उत्सुकता होती है । उपनिषदग्रन्थ विभिन्न वेदों से सम्बद्ध हैं ।

2. भारतमहिमा–इस पाठ में भारत के महत्त्व के वर्णन से सम्बद्ध पुराणों के दो पद्य तथा तीन आधुनिक पद्य दिये गये हैं । हमारे देश भारतवर्ष को प्राचीन काल से इतना महत्त्व दिया गया था कि देवगण भी यहाँ जन्म लेने के लिए तरसते थे । इसकी प्राकृतिक सुषमा अनेक प्रदूषणकारी तथा विध्वंसक क्रियाओं के बाद भी अनुपम है । इसका निरूपण इन पद्यों में प्रस्तुत है ।

3. नीतिश्लोकाः –इस पाठ में व्यासरचित महाभारत के उद्योग पर्व के अन्तर्गत आठ अध्यायों की प्रसिद्ध विदुरनीति से संकलित दस श्लोक हैं । महाभारत युद्ध के आरम्भ में धृतराष्ट्र ने अपनी चित्तशान्ति के लिए विदुर से परामर्श किया था । विदुर ने उन्हें स्वार्थपरक नीति त्याग कर राजनीति के शाश्वत पारमार्थिक उपदेशक दिये थे । इन्हें "विदुरनीति" कहते हैं । इन श्लोकों में विदुर के अमूल्य उपदेश भरे हुए हैं ।

4. मन्दाकिनी-वर्णनम्–वाल्मीकीय रामायण के आयोध्याकाण्ड की सर्ग संख्या–95 से संकलित इस पाठ में चित्रकूट के निकट बहने वाली मन्दाकिनी नामक छोटी नदी का वर्णन है ।

इस पाठ में आदिकवि वाल्मीकि की काव्यशैली तथा वर्णनक्षमता अभिव्यक्त हुई है । श्री राम सीता को मन्दाकिनी का वर्णन सुनाते हैं ।

(ख) कथात्मक पाठ

1. **अलसकथा**–यह पाठ विद्यापति द्वारा रचित पुरुषपरीक्षा नामक कथाग्रन्थ से संकलित एक उपदेशात्मक लघु कथा है। विद्यापति ने मैथिली, अवहट्ट तथा संस्कृत तीनों भाषाओं में ग्रन्थ-रचना की थी। पुरुषपरीक्षा में धर्म, अर्थ, काम इत्यादि विषयों से सम्बद्ध अनेक मनोरञ्जक कथाएँ दी गयी हैं। अलसकथा में आलस्य के निवारण की प्रेरणा दी गयी है। इस पाठ से संसार की विचित्र गतिविधि का भी परिचय मिलता है।

2. **कर्मवीरकथा**–इस पाठ में एक पुरुषार्थी की कथा है जो निर्धनता एवं दलित जाति में जन्म जैसे विपरीत परिवेश में भी रहकर प्रबल इच्छाशक्ति तथा उन्नति की उत्कट कामना के कारण उच्चपद पर पहुँचता है। यह कथा किशोरों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान उत्पन्न करती है, विजय के पथ को प्रशस्त करती है। ऐसे कर्मवीर हमारे आदर्श हैं।

3. **व्याघ्रपथिक कथा** – यह कथा नारायणपण्डित रचित प्रसिद्ध नीतिकथाग्रन्थ 'हितोपदेश' के प्रथम भाग 'मित्रलाभ' से संकलित है। इस कथा में लोभाविष्ट व्यक्ति की दुर्दशा का निरूपण है। आज के समाज में छल-छद्म का वातावरण विद्यमान है जहाँ अल्प वस्तु के लोभ से आकृष्ट होकर लोग अपने प्राण और सम्मान से वंचित हो जाते हैं । यह उपदेश इस कथा से मिलता है कि वंचकों के चक्कर में न पड़ें ।

(ग) संवादात्मक पाठ

1. **कर्णस्य दानवीरता** – यह पाठ संस्कृत के प्रथम नाटककार भास द्वारा रचित कर्णभार नामक एकांकी रूपक से संकलित किया गया है। इसमें महाभारत के प्रसिद्ध पात्र कर्ण की दानवीरता दिखाई गयी है। इन्द्र कर्ण से छलपूर्वक उनके रक्षक कवचकुण्डल को मांग लेते हैं और कर्ण उन्हें दे देता है। कर्ण बिहार के अङ्गराज्य (मुंगेर तथा भागलपुर) का शासक था । इसमें संदेश है कि दान करते हुए मांगने वाले की पृष्ठभूमि जान लेनी चाहिए, अन्यथा परोपकार विनाशक भी हो जाता है ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

2. **शास्त्रकाराः** – यह नवनिर्मित संवादात्मक पाठ है जिसमें प्राचीन भारतीय शास्त्रों तथा उनके प्रमुख रचयिताओं का परिचय दिया गया है। इससे भारतीय सांस्कृतिक निधि के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होगी – यही इस पाठ का उद्देश्य है। इस वार्तालाप का उपयोग कक्षा में हो सकता है ।

(घ) निबन्धात्मक पाठ

1. **पाटलिपुत्रवैभवम्** – इसमें बिहार की राजधानी पटना के प्राचीन महत्त्व का निरूपण करने के साथ ऐतिहासिक परम्परा से आधुनिक राजधानी के प्रसिद्ध स्थलों का भी निरूपण किया गया है। इस पाठ को कण्ठाग्र करके छात्र किसी वाक्-प्रतिस्पर्धा में भाग ले सकते हैं ।

2. **संस्कृतसाहित्ये लेखिकाः** – संस्कृत की सेवा जिस प्रकार पुरुषों ने की है उसी प्रकार महिलाओं ने भी वैदिक युग से आजतक इसमें भाग लिया है । प्रायः इस विषय की उपेक्षा हुई है । प्रस्तुत पाठ में संक्षिप्त रूप से संस्कृत की प्रमुख लेखिकाओं का उल्लेख किया गया है । उनके योगदान संस्कृत साहित्य के इतिहास में अमर है ।

3. **भारतीय संस्काराः** – भारतीय जीवन-दर्शन में चौल कर्म (मुण्डन), उपनयन, विवाह आदि संस्कारों की प्रसिद्धि है। छात्रगण संस्कारों का अर्थ तथा उनके महत्त्व को जान सकें, इसलिए इस स्वतंत्र पाठ को रखा गया है जिससे उन्हें भारतीय संस्कृति के एक महत्त्वपूर्ण पक्ष का व्यवस्थित परिचय मिल सके ।

4. **स्वामी दयानन्दः** – उन्नीसवीं शताब्दी ईस्वी में आविर्भूत समाजसुधारकों में स्वामी दयानन्द अतीव प्रसिद्ध हैं । इन्होंने रूढ़िग्रस्त समाज और विकृत धार्मिक व्यवस्था पर कठोर प्रहार करके आर्य समाज की स्थापना की जिसकी शाखाएँ देश-विदेश में शिक्षासुधार के लिए भी प्रयत्नशील रही हैं । शिक्षाव्यवस्था में गुरुकुल पद्धति का पुनरुद्धार करते हुए इन्होंने आधुनिक शिक्षा के लिए डी० ए० वी० विद्यालय जैसी संस्थाओं की स्थापना को प्रेरित किया था । इनका जीवनचरित प्रस्तुत पाठ में संक्षिप्त रूप से दिया गया है।

5. **विश्वशान्तिः** – आज विश्वभर में विभिन्न प्रकार के विवाद छिड़े हुए हैं जिनसे देशों में आन्तरिक और बाह्य अशान्ति फैली हुई है । सीमा, नदी-जल, धर्म, दल इत्यादि को लेकर स्वार्थप्रेरित होकर असहिष्णु हो गये हैं । इससे अशान्ति का वातावरण बना हुआ है। इस समस्या को उठाकर इसके निवारण के लिए इस पाठ में वर्त्तमान स्थिति का निरूपण किया गया है ।

अध्यापकों से निवेदन - संस्कृत के प्रति छात्र-छात्राओं में रुचि उत्पन्न करने के लिए कक्षा में विद्यमान बहुभाषिकता को अध्यापक आधार-रूप में प्रयोग करें । यथासाध्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी माध्यम बनाते हुए संस्कृत भाषा में दक्षता पाने के लिए छात्रों को उन्मुख करें ।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठ्य-पुस्तक में आये हुए प्रयोगों को आधार बनाकर करना समीचीन होगा । इससे छात्रों में कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता का विकास होगा । अभ्यास के लिए जो सामग्री दी गयी है उसे आधार बनाकर नये-नये अभ्यास प्रश्नों का निर्माण करें तो छात्रों की उन्मुखता अधिक हो सकेगी ।

पद्यात्मक पाठों का स्वर-सहित उच्चारण सिखायें तो वे पाठ सहज ही हृदयंगम हो जाएँगे । गद्य पाठों को भी धैर्य - पूर्वक पढ़ना सिखायें । व्याकरण के प्रकरणों को पृथक् न पढ़ाकर पाठक्रम में ही सन्धि, समास, प्रकृति-प्रत्यय-विभाग (व्युत्पत्ति), विभक्ति इत्यादि की चर्चा करते हुए छात्रों को सिखायें ।

इससे व्याकरण भारस्वरूप नहीं होगा । संक्षेप में कहें कि छात्रों को कुशल बनाना और अपने को अध्यापक के रूप में यशस्वी बनाना शिक्षा के इन दो मूल सूत्रों को न भूलें ।

द्रुतवाचन (Rapid Reading)

इस मूल पाठ्य - पुस्तक के अनुपूरक ग्रन्थ के रूप में द्रुतपाठ या द्रुतवाचन के लिए संस्कृत से सम्बद्ध सामग्री दी गयी है। शिक्षा की अभिनव प्रगति के क्रम में भाषा-विषयों के अध्ययन के लिए इस प्रकार की सामग्री की उपयोगिता अंकित की गयी है । यह सामग्री अनेक लक्ष्यों से सम्पन्न है । पहला लक्ष्य तो छात्रों की जिज्ञासा और रुचि के परिष्करण का है । इस नयी पाठ -सामग्री का परीक्षा से सम्बन्ध नहीं है अतः कोई भार की बात छात्रों के मन में नहीं रहेगी तो इसका वाचन वे आनन्दपूर्वक करेंगे । इससे उनकी ज्ञानवृद्धि भी होगी - जो इसका दूसरा लक्ष्य है। कोई सामग्री यदि पढ़ी जाये तो वर्तमान ज्ञान की समृद्धि में वह योगदान करेगी ही ।

इसका तीसरा लक्ष्य है छात्रों की चिन्तन-प्रक्रिया और सर्जनात्मकता (Creativity) का विकास करना । जिस प्रकार समाचार पत्रों तथा अनुपूरक साहित्य की सामान्य पुस्तकों के अनुशीलन से छात्रों की रचना-क्षमता और चिन्तन-शक्ति विकसित होती है उसी प्रकार इस अनुपूरक सामग्री का आस्वादन सामान्य साहित्य के रूप में किया जायेगा तो निश्चित ही छात्रों की

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

बौद्धिक क्षमता का विकास होगा, उनमें कुछ लिखने -पढ़ने की प्रवृत्ति पनपेगी तथा यह जानकारी उन्हें मिलेगी कि संस्कृत में आज किस प्रकार की रचनाएँ हो रही हैं ।

द्रुतपाठ के लिए संकलित इस सामग्री में जिस आधुनिक रचनाओं को संकलित किया गया है उनके रचनाकारों के प्रति हम अत्यधिक कृतज्ञ हैं ।

मूल पाठ्यपुस्तक तथा द्रुतवाचन के लिए सामग्री-प्रस्तुति में यथासाध्य परिश्रम किया गया है । विभिन्न प्रतिभागियों के द्वारा जो निर्देशानुसार कार्य सम्पादित किया गया उसे यथासम्भव एकरूप बनाने एवं परिष्कृत करने का प्रयास हुआ है तथापि इसमें जो त्रुटि हुई हो उसके लिए अग्रिम क्षमा माँगने के साथ अनुरोध भी करता हूँ कि अपने सत्परामर्शों से अध्यापक बन्धु मुझे अवगत करायें जिससे 'तेजस्वि नावधीतमस्तु' का लक्ष्य प्राप्त हो सके ।

डॉ० सुरेन्द्र कुमार
समन्वयक
संस्कृत पाठ्य-पुस्तक-विकास-समिति
(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार)

उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
अध्यक्ष
संस्कृत पाठ्य-पुस्तक-विकास-समिति
(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार)

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठाङ्काः
1.	मङ्गलम् (उपनिषद्)	1 - 7
2.	पाटलिपुत्रवैभवम् (निबन्धः)	8 - 16
3.	अलसकथा (पुरुषपरीक्षातः कथा)	17 - 24
4.	संस्कृतसाहित्ये लेखिकाः (निबन्धः)	25 - 33
5.	भारतमहिमा (पद्यानि)	34 - 41
6.	भारतीयसंस्काराः (निबन्धः)	42 - 50
7.	नीतिश्लोकाः (विदुरनीतिपद्यानि)	51 - 57
8.	कर्मवीरकथा (आधुनिकलघुकथा)	58 - 67
9.	स्वामी दयानन्दः (निबन्धः)	68 - 76
10.	मन्दाकिनीवर्णनम् (वाल्मीकीयरामायणम्)	77 - 83
11.	व्याघ्रपथिककथा (हितोपदेशकथा)	84 - 92
12.	कर्णस्य दानवीरता (नाटकम्)	93 - 103
13.	विश्वशान्तिः (निबन्धः)	104 - 111
14.	शास्त्रकाराः (वार्तालापः)	112 - 120

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

ABSOL SOLUTIONS PATNA

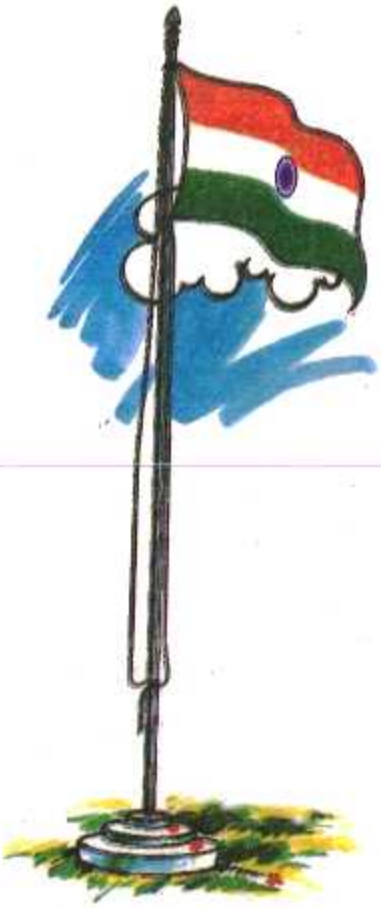

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग,
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना–1
BIHAR STATE TEXT BOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

आवरण मुद्रण : श्री सांई ऑफसेट संदलपुर पटना–6